श्री रामचंद्र कृपालु भजु मन

Shri Ramchandra Kripalu • स्तुति • देवनागरी

श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं।
नवकंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणं॥१॥

कंदर्प अगणित अमित छबि नवनील नीरद सुंदरं।
पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं॥२॥

भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्यवंश निकंदनं।
रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथ नंदनं॥३॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर चाप धर संग्राम जित खरदूषणं॥४॥

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनं।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खलदल गंजनं॥५॥

रचना / पाठ-परंपरा: गोस्वामी तुलसीदास; विनय पत्रिका, प्रचलित राम स्तुति पारंपरिक पाठ; वर्तनी और पाठांतर संभव हैं।